Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-17, Issue-3, December-2023
www.researchguru.net

तेभ्य: स्वधा उपन्यास में विस्थापन की त्रासदी

डॉ. सुरतनभाई मानसिंगभाई वसावा

अंश कालीन मददनीश प्राध्यापक, सरकारी विनयन एवं विज्ञान कॉलेज, देडियापाडा Mo No: 9712242484 Email: surtan.vasava83@gmail.com

सारांश :

रचनाकार नीरजा माधव ने अपना उपन्यास तेभ्य: स्वधा में भारत-पाकिस्तान के विभाजन के बाद पाकिस्तान में निवास कर रहे हिन्दुओं के विस्थापन और उन पर हो हुए अत्याचारों का चित्रण एवं विस्थापन की त्रासदी का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में किया है।

शब्द कुंजी :

नीरजा माधव का परिचय, विस्थापन का अर्थ, तेभ्य: स्वधा उपन्यास में विस्थापन की त्रासदी, भारत पाकिस्तान के बाद हुए कबाइली आक्रमण का चित्रण आदि का चित्रण किया गया है।

प्रस्तावना :

तेभ्य: स्वधा उपन्यास की रचयिता नीरजा माधवा का जन्म 15 मार्च, 1962 में कोतनवालपुर गाँव मुफ्तीगंज (जौनपुर) में हुआ था। माधव जी ने अंग्रेजी विषय में अनुस्नातक एवं पीएच.डी की है। तेभ्य: स्वधा उपन्यास की विषयवस्तु विभाजन की त्रासदी की कथा है। प्रस्तुत उपन्यास में पाकिस्तान से भगाए गए हिन्दुओं की त्रासदी - यंत्रणा की कथा, विस्थापित होकर राजौरी की घाटियों में शरण लिए निरपराध हिन्दूओं की त्रासद कथा है। सन् 1947 में भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद हुए कबाइली आक्रमण और उनकी बर्बरता के घिनौने स्वरूप की कथा तेभ्य: स्वधा उपन्यास में वर्णित है।

राजौरी और उसके आसपास की घाटियाँ कई हजार हिन्दुओं की कत्लगाह बनी थी। बलात्कार, अपहरण और छीनझपट की मूक साक्षी बनी पहाड़ियाँ और बर्फ बना दी गई जिंदगियों के नीचे दबी आग और प्रतिशोध की कथा तथा जातीय स्मृतियों की विषयवस्तु यहाँ मिलती है। व्यक्ति का मूल स्वभाव बलात् परिवर्तित नहीं किया जा सकता। कुछ संस्कार जन्मजात होते हैं, जो किसी भी दशा में मिटते नहीं बल्कि धरती में पड़े बीज की तरह सुरक्षित रहते हैं।

विस्थापन अर्थात् बलपूर्वक किसी स्थान से हटाना। भारत विभाजन के समय पाकिस्तान के अत्याचार से पीड़ित कुछ शरणार्थी कश्मीर के गाँव में पाए गये थे। विस्थापित होकर हिन्दुओं को राजौरी की घाटियों में शरण दी गयी थी। यही निरपराध हिन्दुओं की त्रासद कथा यहाँ मिलती है। प्रस्तुत उपन्यास विषयवस्तु विस्थापन की त्रासदी की कथा है, पर आज तक साहित्य में हिंदुस्तान से ससम्मान विस्थापित हुए लोगों की करूण कथा नहीं बल्कि पाकिस्तान से भगाए गए हिंदुओं की यंत्रणा की कथा है। सन् 1947 ई. में भारत और पाकिस्तान का विभाजन हुआ था। उस समय कई हिंदू पाकिस्तान में रह गये थे और कुछ मुसलमान हिन्दुस्तान में रह गये थे। पाकिस्तान में रह गये हिन्दुओं की जो दुर्दशा हुई थी वह अत्यंत कारुणिक थी। हिन्दुस्तान में रह गये मुसलमान काफी खुश थे और वे वापस पाकिस्तान जाना नहीं चाहते थे, जबकि पाकिस्तान में रह गये हिन्दुओं को इतना कष्ट पहुँचाई जाती थी कि वहाँ उनका दम घुट गया और वे अपना सबकुछ छोड़कर भारत लौट आए थे।

तेभ्य: स्वधा उपन्यास में भारत पाकिस्तान के बाद हुए कबाइली आक्रमण और उनकी बर्बरता के घिनौने स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। कई हजार हिंदुओं की कत्लगाह बनी राजौरी और आसपास की घाटियाँ, बलात्कार, अपहरण और छीन-झपट की मूक साक्षी बनी पहाड़ियाँ और बर्फ बना दी गई जिंदगियों के नीचे दबी आग एवं प्रतिशोध की कथा तेभ्य: स्वधा उपन्यास में देखने मिलती है। भारत पाकिस्तान की विभाजन की माँग किसी एक पक्ष की नहीं थी। यह मात्र एक जिद थी और जिद केवल पाकिस्तानियों की थी, वहाँ के नेताओं की थी। उसी जिद की सजा न जाने केवल कितने बेगुनाह लोगों को भुगतनी पड़ी थी। विभाजन का एक दृश्य कितना सजीव बन पड़ा है। "अगस्त में विभाजन होने के बाद ही कबाइलियों के छद्मवेश में पूरे कश्मीर पर आक्रमण हुआ था। अक्तूबर के दूसरे सप्ताह तक लगभग पाँच हजार सशस्त्र कबाइली कश्मीर में घुस आए थे। ये बर्बर घुस पैठिए मुजफ्फराबाद तिथवल इलाके में घुसे जम्मू-कश्मीर में कोहाला के रास्ते आए, और दूसरा रास्ता अखतूर के रास्ते में जम्मू का छंब-राजौरी की घाटी वाला था। इसी राजौरी की घाटी में शरण लिए कुछ हिन्दु परिवार थे। हमलावरों का काफिला राजौरी छंब में आया। इन जिहादी फौजों यानी मुजाहिदों की छावनियाँ कोहाट घाटी, रावलपिंडी, सरगोधा, झेलम, गुज्जर खाँ, चकअरू, बाघा, लाहौर जैसी पर थीं और यहीं से हमलावरों के रूप में आए थे। मुजफ्फराबाद पर कब्जा करने के बाद कोटली, बारामूला की सड़क के दोनों ओर पड़नेवाले शहरों और गाँवों को बरबाद करके उरी पर कब्जा कर लिया था। एक भी घर लूट से बचा नहीं था। उन्हों ने हिंदुओं और सिखों को लूटा और मार डाला। सबके घरों में आग लगा दी गई। कत्लेआम का दर्दनाक गीत हवाओं में गूँज रहा था। लोग भगवान से अपनी रक्षा की भीख माँगते थे। इन्होंने हिंदू-सिख स्त्रियों के साथ बलात्कार किया। हजारों लड़कियों ने शीलभंग और अपहरण के बाद मौत को गले लगा लिया था। मुसलमान नागरिकों को कसम खानी पड़ी कि उनके घरों में कोई हिन्दू शरणार्थी नहीं है। पहले तो हमलावरों ने मुसलमानों के साथ कोई बुरा बरताव न करके यह विश्वास दिलाया कि वे कश्मीरी मुसलमानों की मदद करने आए हैं, और यहीं से हिंदू और मुसलमानों में द्वेष और फूट की चिनगारी भड़की थी। इसी कत्लेआम में यदि किसी मुसलमान के घर से कोई हिन्दू निकलता दिखाई देता तो हिन्दू के साथ उसी मुसलमान परिवार को भी हमलावर खत्म कर देते थे। कोहला से उरी तक के गाँवों के लगभग बाईस हजार हिन्दू मारे गए। उस समय पवित्र रमजान मास चल रहा था। चौदहवीं जुलहल को कई हजार सिखों व हिंदुओं को एक जगह एकट्ठा करके उनकी दाढ़ियाँ काट डाली गयीं और कलमा पढ़ने का आदेश दिया गया। गोमांस खाने के साथ ही नारा-ए-तकबीर लगाने को विवश किया गया। कभी-कभार जुलूस के साथ नारों की आवाज- पंडित कश्मीर से बाहर जाओ, पंडिताइन को छोड़ जाओ।"

विस्थापन की त्रासदी - नायिका मीना स्वयं विस्थापन की ही शिकार है वह विस्थापितावस्था में ही राजौरी घाटी पर बसी थी और आतंकवादी साफी खान की नजर में पड़ जाती है। वह मीना को उठाकर ले जाता है और दो-दो बीबियों के होते हुए भी मीना को मीना से अमीना बनाता है। वह जिल्लत की जिंदगी से छुटकारा चाहती थी। मौत की भीख माँगती है, पर यह भी उसके नसीब में नहीं था। साफी खान अत्यंत क्रूर था। मीना भाग जाना चाहती थी, किंतु साफी खान बड़ा जालिम था। एक हिंदू

लड़की की खबर अखबार में पढ़कर मीना दहल उठी कि "हिन्दू लड़की की कई आतंकवादियों ने उसकी माँ के सामने ही इज्जत लूट ली थी और उसके बाद उसकी माँ का एक-एक अंग उसके सामने ही काट डाला था। लड़की के गले में एक तख्ती लटकाकर, अर्धनग्न अवस्था में ही हाथ-पैर बाँधकर, उरी बाजार के पास सड़क पर लिटाकर चले गये थे। तख्ती पर लिखा था लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान। लड़की विक्षिप्त सी लगातार चिल्ला-चिल्लाकर कह रही थी - मम्मी, सलवार बाँध दो मेरी। कसकर बाँध दो। बाद में लड़की विक्षिप्तावस्था में ही पास की झील में छलाँग लगा देती है।" इसी प्रकार हिन्दुओं पर अत्याचार होते रहते थे।

नायिका मीना साफी खान के भयंकर अत्याचारों का शिकार होती है। वह बेटे को संस्कृत की ऋचाए पढ़ाती है। "वह बिना कुछ समझे ही सिर हिला देता और अम्मी पुन: अपने काम में लीन हो जाती। बस अम्मी का बोलना वह रात के एकांत में सुनता, जब वे उसे संस्कृत पढ़ा रही होती। वह भी घर में अब्बू की लंबी अनुपस्थिति के कारण ही मुमकिन हो पाता। दोनों अम्मीजान अपने-अपने बच्चों के साथ खा-पीकर अपनी कोठरियों में सो रही होती तब अम्मी लालटेन की रोशनी में उसे पढ़ाने बैठ जाती। कोठरी का दरवाजा अंदर से बंद कर, अपने संदूक में बिछी चादर के अंतिम तह से नीचे छिपाकर अपने हाथ से लिखी कॉपी निकालती और संस्कृत का एक-एक श्लोक अर्थ सहित हर दिन रटवाती।" साफी खान बेटे अज्जू को मौलवी साहब से नमाज की आयतों को याद करने का आग्रह रखते थे। एक बार अब्बू के कहने पर वह आयत सुनाता है। बाद में वह मुश्किल आयतें सुनाता है, जो वास्तव में सस्कृत भाषा में ऋचाएँ थीं। "मुझे यही नहीं, अब्बू, और भी मुश्किल आयतें याद है। सुनाऊँ.....? शाबाश सुनाओ। ऊँ भंद्र कर्णेभिः------ऊँ शान्तिः! शान्तिः! शान्तिः..... ये क्या है रे, काफिर? अब्बू की आँखें अंगारा बन गई थीं।" इस पर अज्जू को एक झन्नाटेदार थप्पड़ पड़ती है। अम्मी ने सिखाया सुनते ही साफी खान आपे से बाहर हो जाता है। और बरस पड़ता है अमीना पर - "चुप्प, मक्कार जात.....। अब्बू ने राइफल के कुंदे से अमीना की जाँघ पर जोरदार वार किया। पीड़ा से बिलबिलाकर वह रसोई की ओर भागी तो अब्बू उसके पीछे-पीछे राइफल लिए दौड़े। बेटा भी रोता हुआ रसोई में दौड़ा। अब्बू चूल्हे में से जलती लकड़ी खींचकर, एक हाथ से अम्मी को जमीन पर पटककर दूसरे हाथ से उसकी जाँघों पर जगह-जगह छुआते हैं। अमीना दर्द से चीख रही थी।" बाद में बटुली में से गोश्त का जलता टुकड़ा उसके मुँह में ठूस दिया - कहता - "ले, खा गाय का गोश्त। बहुत दिनों से तेरे ईमान को बचाता आ रहा था मैं। सोच रहा था, कभी-न-कभी तू खूद रास्ते पर आ जाएगी, लेकिन काफिर की औलाद काफिर ही रहेगी। मेरे खानदान को भी नापाक करने तुल गई तू।" इस प्रकार नायिका अमीना पर अत्याचार होते रहते थे।

निष्कर्ष :

अत: निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि उपन्यास की नायिका मीना की स्थिति दयनीय और हदयस्पर्शी है। पच्चीस हजार के लगभग विस्थापित हिंदू अपनी जन्मभूमि से बलात् हटाए गए क्षत्रिय, वेश्य, ब्राह्मण, सिख सभी वर्ग रावलपिंडी और आसपास के गाँवों, कस्बों से भागकर आए हिन्दू थे। इन हिन्दूओं पर कत्लेआम अत्यार हुए थे, क्या दोष था उनका, न तो विभाजन का निर्णय उनका अपना था, न किसी वर्ग विशेष में उनका जन्म ले लेना था। अपने खून-पसीने

से सींची धरती, अपने पूर्वजों का घर, अपने बचपन की सुनहरी यादें, सबकुछ छोड़कर आँसू भरी आँखों से पीछे मुड़-मुड़कर देखनेवाले उन निरीह हिन्दुओं का क्या दोष था-कि उन्हें पाकिस्तान से खदेड़ दिया गया। विस्थापित कर दिया गया। उन हिन्दुओं पर आतंकी हमले और पाकिस्तानी आतंकी के अत्याचार, हजारों लड़कियों ने शीलभंग तथा अपहरण के बाद मौत को गले लगा लिया था। सचमूच में विस्थापन की पीड़ा दर्दनाक दिखाई पड़ती है।

संदर्भ

1. नीरजा माधव, तेभ्यः स्वधा, विद्या विहार, प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011 पृ. 37-38
2. वही, पृ. 19
3. वही, पृ. 16